वक्तव्य: 06 (वीथी और प्रहसन)

9- वीथी :- (वीथि+वाडिप्)- वीथी को इसकिये वीथी कहते हैं क्योंकि यह वीथी (गली) की भांति टेढ़ी-मेढ़ी अर्थात् उक्तिवक्रतापूर्ण हुआ करती है ।(वक्रोक्तिमार्गेण गमनाद् वीथीव वीथी) साहित्यदर्पणकार के अनुसार –

वीथ्यामेको भवेदङ्क: काश्चिदेकोऽत्र कल्प्यते ।

आकाशभाषितैरुक्तैश्चित्रां प्रत्युक्तिमाश्रित: ॥

सूचयेद्भूरिं श्रृङ्गारं किञ्चिदन्यान्स्सान् प्रति ।

मुखनिर्बहणे सन्धी अर्थप्रकृतयोऽखिला: ॥[13]

अर्थात् इसमें एक अङ्क होता है ।

एक ही नायक "आकाशभाषित" के द्वारा, चित्र-विचित्र, उत्तर-प्रत्युत्तर पूर्वक अन्याय काल्पनिक पात्रों से , आलाप-संलाप करता है ।

श्रृङ्गार की अभिव्यक्ति अधिक तथा अन्य की कम होती है ।

मुख व निर्वहणा सन्धियों के साथ अर्थप्रकृतियाँ ५ होती हैं ।

नोट—

वीथी में श्रृङ्गार-बाहुल्य का अर्थ है- कैशिकी प्राचुर्य ।

वीथी 13 प्रकार की होती है-

I. **उद्धात्यक :-** जहाँ दो पात्रों का वार्तालाप गूढार्थ पदों अथवा प्रश्नोत्तर ढंग से हो ।

II. **अवगलित :-** जहाँएक कार्य के प्रस्तुत होने पर दुसरा कार्य सिद्ध हो जाता है (दुसरा अवगलित है) अथवा एक ही क्रिया के द्वार एक कार्य से अन्य कार्य सम्पादित हो (प्रथम अवगलित है)

---

[13] साहित्यदर्पणकार 6/253-54

III. **प्रपञ्च :-** परस्पर की हास्यजनक मिथ्या स्तुति ही प्रपञ्च है।

IV. **त्रिगत :-** शब्दों की साम्यता के कारण अनेक अर्थों की कल्पना करना त्रिगत है।

V. **छल :-** ऊपर से प्रिय लगने वाले,किन्तु वासतव में अप्रिय वाक्यों द्वारा किसी को छलना।

VI. **वाक्केलि :-** प्रकरण प्रारम्भ किये जाने पर बीच में रोक देने को अथवा दो- तीन पात्रों के परस्पर हास-परिहास को वाक्केलि कहते हैं।

VII. **अधिबल :-** परस्पर स्पर्द्धापूर्वक बढ़-चढ़कर वार्तालाप करने को अधिबल कहते हैं।

VIII. **गण्ड :-** प्रस्तुत विषय से सम्बद्ध, किन्तु विरुद्धार्थक वचन के सहसा उपन्यास को गण्ड कहते हैं।

IX. **अवस्यन्दित :-** स्वाभिप्राय के प्रकाशक वचन का जहाँ दूसरे ढंग से अर्थ ग्रहण किया जाये, वह अवस्यन्दित है।

X. **नालिका :-**हास्य से युक्त निगूढार्थक पहेली को नालिका कहते हैं।

XI. **असत्प्रलाप :-** असम्बद्ध अर्थ वाले उत्तर को असत्प्रलाप कहते हैं।

XII. **व्याहार :-** जिस वचन का प्रयोजन और ही हो तथा दूसरे के लाभार्थक हासजनक वचन व्याहार कहलाता है।

XIII. **मृदव :-** ऐसा वचन-विन्यास,जिसमेदोष,गुण जैसे लगे तथा गुण, दोष जैसे – मृदव कहलाता है।

- वीथी का प्रसिद्ध उदाहरण है -**मालविका।**

10- प्रहसन :- **प्र** उपसर्ग पूर्वक **हस्** धातु से **भावे ल्युट्** से **प्रहसनम्** शब्द निष्पन्न होता है। नाट्यदर्पणकार ने इसकी व्युत्पत्ति दी है-

"प्रहसनेन हि पाखण्डिप्रभृतीनां चरितं विज्ञाय विमुखः पुरूषो न भुयस्तान वञ्चकानुपसर्पत्ति।

अर्थात् प्रहसन में दम्भ-पाखण्ड आदि दुर्गुणों वाले नायकचरित का जो चित्रण हुआ करता है, उससे सामाजिकों को यह लाभ हुआ करता है, कि वे दम्भी व पाखण्डी लोगों से बच जाते हैं।

भाणवत्सन्धिसन्ध्यङ्गलास्याङ्गाङ्कैर्विनिर्मितम्।

भवेत्प्रहसनं वृत्तं निन्धानां कविकल्पितम्॥

अत्र नारभटी, नापि विष्कम्भकप्रवेशकौ।

अङ्गी हास्यरसस्तत्र वीथ्यङ्गानां स्थितिर्न वा॥

1-शुद्ध-

तपस्विभगवद्विप्रभृतिष्वत्र नायक: ।

एको यत्र भवेद्धृष्टो हास्यं तच्छुद्धमुच्यते ॥

अर्थात् प्रहसन वह है, जिसमें भाण की भांति सन्धि, संध्यङ्गम् लास्याङ्ग और अङ्क की रचना हो ।

इसका नायक अधम प्रकृति का तथा कथा कल्पित होती है ।

इसमें आरभटी वृत्ति, विष्कम्भक व प्रवेशक नहीं होते ।

अङ्गी रस हास्य होता है । वीथी के अङ्गों की योजना ऐच्छिक ।

शुद्ध प्रहसन वह माना जाता है, जिसमें तपस्वी, संन्यासी और ब्राह्मण में से किसी एक का धॆउष्टनायक के रूप में चित्रण हो ।

1-संकीर्ण :- **आश्रित्य कञ्चन जनं संकीर्णमिति तद्विदु: ॥**6/265॥

अर्थात् जिसमें किसी भी अधम प्रकृतु के व्यक्ति को नायक के रूप में चित्रण किया जाये । जैसे- धुर्तचरितम् प्रहसन ।

2- विकृत :- **विकृतं तु विदुर्यत्र षण्ढकञ्चुकितापसा: ।**

भुjaङ्गचारणभटप्रभृतेर्वेषवग्युता: ॥ 6/268 ॥

अर्थात् जिसमें नपुंसक, कञ्चुकी और तापस लोग कामुक, चारण और योद्धा लोगों की वेष-भूषा और बोल-चाल का अनुकरण करते हों, वह विकृत प्रहसन कहलाता है ।

नोट :- भरतमुनि ने तृतीय प्रकार के प्रहसन को सङ्कीर्ण के ही अन्तर्गत स्वीकार किया है ।

प्रहसनों में **"मजविलासप्रहसनम्"** बहुत प्रसिद्ध है ।